International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 2, Issue 5, Sept.-Oct., 2014, pp: (36-40), Impact Factor: 1.267, Available online at: www.erpublications.com

विष्वक्षितिज पर हिन्दी

डॉ. रश्मिप्रभा

सह प्रवक्ता, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय

सारांश

मानव के व्यवहार, प्रवृति और उसके क्रिया कलापों की अभिव्यक्ति का साधन भाषा होती है। भाषा के अभाव में मानव पंगु के समान है। सांकेतिक ध्वनि से विकास क्रम शुरू कर समय के साथ–साथ भाषा लिपिबद्ध हुई। हिन्दी भाषा की लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ। जिसे देवनागरी की संज्ञा दी गई। हिन्दी प्राचीन काल से बहुभाषी सम्पूर्ण भारत की सम्पर्क भाषा रही है। अनेक कवियों ने इसके सम्मान में अपने मनोभाव व्यक्त किए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसे राष्ट्र व राज भाषा का सम्मान मिला। विभिन्न सोपानों से गुजरते हुए हिन्दी समय के साथ–साथ परिष्कृत व परिनिष्ठित होकर विश्व स्तर पर स्थापित हो चुकी है। विश्व के अनेक देशों में बोली, समझी जाती है। यही नहीं अनेक देशों में हिन्दी में अध्ययन–अध्यापन व अनुवाद कार्य भी हो रहा है। प्रचार–प्रसार के श्रव्य माध्यम, रेडियो के विदेशी केन्द्रों से हिन्दी में कार्यक्रम भी प्रसारित हो रहे हैं। आज हिन्दी भारत की सीमा से निकल विश्व क्षितिज पर पंख फैला रही है।

भाषा मानव के व्यवहार, प्रवृति और उसके सभी क्रिया–कलापों की निष्पन्नता का साधन है। आचार्य दण्डी के शब्दों में ''यदि शब्द (भाषा) की ज्योति न जली होती तो यह त्रिभुवन अन्धकार में निमग्न हो जाता'' वास्तव में भाषा मानव के हृदय की कुंजी है। मानवता का विकास भाषा के आधार पर ही संभव है। भाषा का उद्गम विचारों के प्रादुर्भाव से होता है। ''मौखिक भाषा ध्वनि के रूप में कर्णप्रिय होती है, जबकि लिखित भाषा ध्वनि की, अभिव्यक्ति का माध्यम बनकर चित्रमय लिपिक के रूप में चक्षुप्रिय होती है। इस संदर्भ में वाङ्मय की सरंचना के लिए विचार ही सबसे महत्वपूर्ण होते हैं और इनको यदि मातृभाषा में व्यक्त किया जाए तो विचारों का सम्प्रेषण ठीक एवं बोधमय होता है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है और इस स्थिति में ही उस भाषा में रचा गया साहित्य उच्चकोटि का होकर विश्वस्तरीय बनने की क्षमता रखता है।[1]

किसी भी सभ्यता का विकास भाषगत विकास का पर्याय होता है। भाषा के अभाव में मनुष्य पंगु समान है। संकेतों के माध्यम से शुरू होने वाली सांकेतिक भाषा के बाद ध्वनि से मौखिक भाषा अस्तित्व में आई और धीरे–धीरे विकास क्रम में लिखित भाषा का प्रादुर्भाव हुआ। लिखित रूप में भी चित्र या चिह्न बनाकर भाषा को रूप, आकार अर्थात लिपि दी गई। समय के साथ–साथ ब्राह्मी से विकसित होती हुई हमारी आज की देवनागरी लिपि का उद्भव हुआ। जो हमारी राष्ट्र भाषा व मातृभाषा हिन्दी की लिपि मानी जाती है।

हिन्दी प्राचीनकाल से ही हमारे बहुभाषी सम्पूर्ण भारत की सम्पर्क भाषा रही है। पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक करोड़ों लोग, संत महात्मा, हिन्दी में ही अपने भाव संप्रेषित करते रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस भाषा को 'राजभाषा' का दर्जा मिला। अपनी क्षमता के कारण हिन्दी 'राष्ट्रभाषा' बन गौरवान्वित हुई। इसे ये सम्मान अचानक ही प्राप्त नहीं हुए अपितु इसके पीछे उसका एक गरिमापूर्ण इतिहास रहा है।

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय हिन्दी को 'राष्ट्र–भाषा' का गौरव प्रदान किया गया। गांधी जी ने इसके महत्व को गंभीरता एवं दूरदृष्टि से समझा और इसे प्रतिष्ठित करने में अहम् भूमिका निभाई। उस समय देश के सभी क्षेत्रों में महापुरूषों, क्रांतिकारियों एवं देश–भक्तों ने राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचारित करने का प्रयास किया। स्वाधीनता के लिए लोगों को संगठित करना अनिवार्य था। उन्हें संगठित करने के लिए संवाद, विश्वास और स्वदेशाभिमान से ओतप्रोत भाषा की आवश्यकता थी। अतः स्वाधीनता की प्राप्ति के दृढ़ संकल्प के साथ–साथ राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाने का भी संकल्प किया गया। सन् 1925 के कानपुर अधिवेशन में राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसकी घोषणा भी कर दी थी। हिन्दी की इस आन्तरिक शक्ति और इसके महत्व को स्वीकारते हुए प्रसिद्ध कवि श्री उदयभानु 'हंस' ने लिखा है –

फल–फूल नहीं जिसमें, वह उद्यान नहीं।
तन व्यर्थ है वह, जिसमें रहें प्राण नहीं।।
कितना भी कोई, तर्क या वितर्क करें।
हिन्दी के बिना, हिन्द की पहचान नहीं।।

हिन्दी की शक्ति और उसकी आवश्यकता को पहचानते हुए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी जनसाधारण में इसका प्रचार किया और इसे लोकप्रिय बनाने का भरसक प्रयास किया इसी दृष्टिकोण से उन्होंने हिन्दी के विषय में कहा है –

''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।।[2]

भारतेन्दु जी द्वारा रचित इन पंक्तियों में भी यही मर्म छिपा था कि जब तक कोई एक ऐसी भाषा नहीं होगी जो हम सब भारतीयों को एकता के सूत्र में बांध दे तब तक हमारे हृदयों में दासता का जो दर्द है वह दूर नहीं हो सकता है। अतः देश के अधिक से अधिक लोगों की एक सम्पर्क भाषा हो इसी उद्देश्य से संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा हिन्दी का निर्धारण किया गया फलतः हिन्दी एक ऐसी सर्वमान्य भाषा के रूप में उभरी, जिसे समूचा राष्ट्र अपने दैनिक जीवन में बोलता और समझता है। भाषा को सम्मान देना, राष्ट्र को सम्मान देना ही है। डॉ० राम मनोहर लोहिया ने हिन्दी के प्रति अपनी सच्ची आस्था प्रकट करते हुए कहा था कि –

''हिन्दी में सात लाख के करीब शब्द हैं, जबकि अंग्रेजी में अढ़ाई लाख के आस–पास। इसके अलावा, अंग्रेजी की शब्द गढ़ने की शक्ति नष्ट हो चुकी है। जबकि हिन्दी को अभी अपनी जवानी ही नहीं चढ़ी। संसार की सबसे धनी भाषा है हिन्दी, लेकिन बरतनों की भांति इन शब्दों पर धरे–धरे काई जम गई है। ये बरतन मंजने पर ही चमकेंगे, किसी रसायनशाला के अनुसंधान से नहीं। जब काई जमे हुए ऊबड़–खाबड़ शब्दों का इस्तेमाल, विश्वविद्यालय, न्यायालय, विधायिकाओं वगैरह में होने लगेगा, तब ये चमकेंगे और इनका अर्थ जमेगा।[3]

इसी बात को चरितार्थ कर विभिन्न सोपानों से गुजरते हुए समय के साथ हिन्दी परिष्कृत व परिनिष्ठित होती रही है और आज हिन्दी को नई दिशा मिल गई है। वैश्विकरण और आर्थिक उदारीकरण की उदारता के कारण हिन्दी विकास व ख्याति पथ पर अग्रसर है। बदलते युग के साथ हिन्दी बदल रही है और बदलनी भी चाहिए क्योंकि कोई भी भाषा तभी सर्वस्वीकार और जीवित रह सकती है; जब वह सदा नीरा प्रवाहमान सरिता होने की क्षमता रखती हो।

हिन्दी सम्पूर्ण भारत की सर्वोत्कृष्ठ व सर्वस्वीकृत भाषा है। आज हिन्दी विश्वभाषा बन चुकी है। सूचना प्रोद्यौगिकी के विकास और बढ़ते वैश्विकरण ने हिन्दी को वैश्विक फलक पर विराजमान करने में अहम् भूमिका निभाई है। आज वायस ऑफ अमेरिका, रेडियो चीन, बी०बी०सी०, यू०एन०ओ०, रेडियो जापान के अतिरिक्त नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, बंगला देश के प्रतिष्ठित रेडियों से हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। विदेश राज्य मंत्री आनंद शर्मा के ये वाक्य हिन्दी की उस स्थिति को व्यक्त करते हैं जो न केवल प्रशंसनीय हैं वरन् सम्मानीय भी हैं। ''विश्व हिन्दी सम्मेलन ने बतीस साल का सफर पूरा किया है। आज 110 करोड़ भारतीयों की आवाज दुनिया सम्मान के साथ सुन रही है। अबवह दिन दूर नहीं, जब हिन्दी यू०एन०ओ० की भाषा सूची में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराएगी।[4]

भाषिक व्यवहार के रूप में हिन्दी केवल भारत में ही नहीं विश्व के अनेक राष्ट्रों में भी व्यवहार में प्रयुक्त हो रही है। विश्व के कई देशों में हिन्दी को न सिर्फ पढ़ाया लिखाया जाता है अपितु इसे बोलने, समझने वालों की संख्या भी चौकाने वाली है। ऐसे ही कुछ देशों में हिन्दी के वर्चस्व के आंकड़े इसके गौरव में चार चांद लगाते हैं। भारत के पड़ोसी देश नेपाल, बांग्ला देश, पाकिस्तान, श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार, इंडोनेश्या, हांगकांग, चीन आदि देशों की भाषा का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में हिन्दी से जुड़ा प्रतीत होता है। इन देशों में प्रयुक्त होने वाली भाषा पर दृष्टिपात करने से जो तथ्य उभर कर आए वो हिन्दी को गौरवान्वित करते हैं यथा –

1.पाकिस्तान– पाकिस्तान की राजभाषा उर्दू है, जो मूल रूप में भारत की भाषा है। उर्दू और हिन्दी का व्याकरण प्रायः एक ही है। मुख्य अन्तर लिपि का है। हिन्दी, उर्दू का विकास की दृष्टि से मूलस्रोत एक ही है। भिन्न परिस्थितियों में पड़कर ये अलग–अलग भाषाएं हो गई हैं। डॉ० सुनीति कुमार चैटर्जी आदि भाषा वैज्ञानिकों का मत है कि संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रचुरता के कारण तथा नागरी लिपि में लिखे जाने के कारण यह हिन्दी कहलाई और अरबी, फारसी शब्दों की अधिकता तथा फारसी लिपि में लिखे लाने के कारण उर्दू कहलाती है।[5]

2.नेपाल –भारत के इस पड़ोसी देश में हिन्दी बोलने व समझने वालों की संख्या 90 प्रतिशत तक है। यहां 1960 तक शिक्षा का माध्यम हिन्दी रहा था। आज भी माध्यमिक स्तर पर हिन्दी ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। दरअसल हिन्दी व नेपाली दोनों की लिपि देवनागरी ही है। ग्रियर्सन के वर्गीकरण में इसे पहाड़ी समुदाय की आर्य भाषा के अन्तर्गत रखा गया है।

3.भूटान –बौद्ध धर्म मानने वालों की संख्या अधिक होने के कारण भूटान की भाषा पर पाली, संस्कृत व नेपाली का प्रभाव परिलक्षित होता है। वहां के पांच विद्यालयों में हिन्दी के पठन–पाठन की भी व्यवस्था है।

4.बांग्ला देष–यहां की राजभाषा बांग्ला है जो भारत की भी एक भाषा है। बांग्ला व हिन्दी दोनों ही भारोपीय परिवार की भाषाएं हैं। ''बांग्ला के दो भेद हैं– पूर्वी और पश्चिमी। पश्चिमी भाग भारत में और पूर्वी बांग्ला देश में है। इसकी लिपि अपनी है जिसे 'बंगला' कहते हैं। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएं बंगला के माध्यम से ही अंग्रेजी विचारधारा से प्रभावित हुई है।[6] इस प्रकार बंगला देश में भी हिन्दी बोलने व समझने वालों की संख्या अधिक है।

5.श्रीलंका–यहां की राजभाषा 'सिंहली' है। यह भाषा भी आधुनिक आर्यभाषा वर्ग की एक भाषा है। डॉ० चैटर्जी ने इसे अपने वर्गीकरण में मान्यता दी है। कलोणिय विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा–साहित्य व संस्कृति के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है। वहां के परीक्षा विभाग द्वारा संचालित उच्चतम पाठशाला प्रमाण–पत्र परीक्षा के लिए हिन्दी भी एक विषय के रूप में शामिल है।

6.मालदीव –इस पड़ोसी देश की भाषा 'दिवेही' है, यह भी भारोपीय परिवार की एक भाषा है और यह भारत के एक द्वीप 'मिनिकोय' में भी बोली जाती है, जहां इसे 'महल' कहा जाता है। 'हिन्दी' और इस भाषा में अद्भुत साम्य है। इसकी संख्याएं भी हिन्दी से बहुत मिलती–जुलती हैं।

7.इन्डोनेषिया –इस राष्ट्र की भाषा का नाम 'बहासा इन्डोनेशिया' है। इस भाषा में 18 प्रतिशत से अधिक शब्द संस्कृत के हैं। इन्डोनेशिया का एक द्वीप बाली तो हिन्दू बहुल द्वीप है जहां हिन्दी बोलने, समझने वालों की संख्या काफी तादाद में है।

8.म्यांमार–ब्रिटिश भारत का एक अंग होने के कारण यहां सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी पहले से ही प्रचलित है।

9.हांगकांग – यहां के एक खास बाजार में तो हिन्दी बोलकर भी काम चलाया जा सकता है। यहां 90 प्रतिशत से अधिक जनता हिन्दी समझती है।

10.चीन – चीन के लोग स्वयं सहर्ष स्वीकारे करते हैं कि उनकी भाषा के निर्माण में भारतीय आचार्य पाणिनी के व्याकरण अष्टाध्यायी का विशिष्ट योगदान है। चीन की ऐतिहासिक दीवार की स्वागत–शिला पर 'ओम नमो भगवते' अंकित होना हिन्दी के प्रति प्रेम व प्रयोग का साक्षात् प्रमाण है।

इन देशों के अतिरिक्त विश्व के अनेक ऐसे देश हैं जहां हिन्दी बोली व समझी जाती है। यही नहीं इस भाषा में विदेशी विद्वानों द्वारा साहित्य लेखन भी हो रहा है। जो हिन्दी भाषा के लिए गौरव की बात है। उदाहरणस्वरूप कुछ विदेशी साहित्यकारों के नाम उल्लेखनीय हैं :–

''1. प्रोफेसर ओडोलीन सीमीचेल – इनकी प्रमुख रचनाएं हैं। मेरे प्रीत तेरे गीत (1982), स्वाति बूंद (1983), नमो नमो भारतमाता (1983), तेरे दिग दिगंतर अभिराम (1984)।
2. किंग यांग शिक – दक्षिणी कोरियाई।
3. विक्टोरिया सेलेना – रूसी साहित्यकार।
4. अभिमन्यु उनुथ – इनकी रचना 'लाल पसीना' देश के कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है।
5. विड हान – बीजिंग विश्वविद्यालय के इस प्रोफेसर ने तुलसीदास कृत रामचरितमानस का चीनी भाषा में अनुवाद किया।''[7]

वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती साख ने कई देशों को इसे ज्यादा से ज्यादा जानने और समझने पर विवश कर दिया है। विदेश में हिन्दी की महत्ता साल दर साल बढ़ रही है। इस दृष्टि से विश्व फलक पर दृष्टिपात करने पर जो दृष्टिगोचर हुआ वह हिन्दी के लिए गर्व और गौरव की बात है।

अमेरिका में हिन्दी के प्रति गहन रूचि का विस्तार हो रहा है। अमेरिका के मन्दिरों में भी हिन्दी की शिक्षा की व्यवस्था अव्यवसायिक रूप में की जाती है। मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष 74 उच्च संस्थानों में हिन्दी की दशा–दिशा बहुत कुछ अंशों में वही है, जो भारत में है। वह जन भाषा है, जन के साथ जुड़ी है। अमेरिका में लगभग 3.17 लाख लोग हिन्दी भाषी हैं।

ब्रिटेन में भी लंदन यूनिवर्सिटी, कैम्ब्रिज और यॉर्क विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्यापन की व्यवस्था है। ब्रिटिश म्यूजियम इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी में मध्यकालीन हिन्दी साहित्य की पांडुलिपियों का संग्रह है। लंदन में हिन्दी प्रचार परिषद् नामक एक संस्था स्थापित है, जो भारत की राष्ट्र भाषा के प्रचार में संलग्न है।

इजराइल के तेल अवीव विश्वविद्यालय में सन् 2000 से लेकर पढ़ाई के हर वर्ष के अंत में 'हिन्दी समारोहों' का आयोजन किया जाता है। यहां हर वर्ष 'अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी दिवस' बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। हर वर्ष इस विश्वविद्यालय में 20–25 विद्यार्थी हिन्दी सीखने आते हैं। उनके लिए हिन्दी एक भाषा ही नहीं, वरन् भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

जापान में भी हिन्दी को सम्मानीय स्थान प्राप्त है। सन् 1950 में जापान रेडियो से प्रसारित होने वाला पहला हिन्दी कार्यक्रम इसका प्रमाण है। पिछले दिनों टोक्यो में सम्पन्न हुए हिन्दी उर्दू सम्मेलनों में हिन्दी ध्वज, गर्व से लहराया। सम्मेलन के संयोजक प्रो० सुरेश ऋतुपूर्ण ने अपने भाषण में कहा – ''टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज ने हिन्दी के अध्ययन के सौ साल पूर्ण किए हैं जो कि जापान में हिन्दी भाषा के संबंधों की गहराई का अहसास कराता है।[8]

फीजी में हिन्दी के विकास का इतिहास भरतवंशियों की साधना और उनके विकास का इतिहास है। हिन्दी के इस विकास में कितने ही लेखकों, पत्रकारों, राजनीतिज्ञों, व्यवसायियों तथा सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं का सक्रिय सहयोग रहा है। फीजीवासियों में अपनी भाषा हिन्दी के प्रति विशेष मोह है। वे हिन्दी को अपनी अस्मिता से जोड़ते हैं तथा उनका दृढ़ विश्वास है कि अपनी भाषा की प्रतिष्ठा और सुरक्षा के माध्यम से ही वे अपनी संस्कृति को जीवित और सुरक्षित रख सकते हैं। वहां हिन्दी को विशेष सम्मान प्राप्त है। वहां केवल भारतीय ही नहीं, लगभग सभी शिक्षित हिन्दी भाषा समझते एवं बोलते हैं और सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का ही व्यवहार करते हैं।

- मारीशस, गुयाना, सूरीनाम, ट्रिनिडाड, टोबैगो एवं संयुक्त अरब अमीरात में हिन्दी अल्पसंख्यक भाषा है।
- जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों ने हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। यहां कई संगठन हिन्दी के प्रचार का काम कर रहे हैं।
- हालैंड के चार विश्वविद्यालयों में 1930 से इसे प्रमुख विषय के रूप में अपनाया गया है। डच विद्वान केटलर ने हिन्दी भाषा का पहला व्याकरण 1698 में लिखा था।
- चीन में 1942 में हिन्दी अध्ययन की शुरूआत हुई। 1957 में यहां हिन्दी रचनाओं का चीनी में अनुवाद कार्य आरम्भ हुआ।
- रूस में भी व्यापक स्तर पर हिन्दी रचनाओं एवं ग्रन्थों का रूसी भाषा में अनुवाद कार्य होता है।
  नार्वे में हिन्दी की स्थिति गत पंद्रह–बीस वर्षों में पर्याप्त सुदृढ़ है। यद्यपि नार्वे में अप्रवासी भारतीयों ने लगभग

तीस–पैंतीस सालों से ही रहना शुरू किया है तथापि इस अल्प अवधि में ही उन्होंने अपनी अलग पहचान बना ली है। अपने ही प्रयत्नों से हिन्दी में अनेक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी आरम्भ किया 'परिचय', त्रिवेणी आदि परन्तु कुछ समय बाद ये बंद हो गई। सन् 1990 के जनवरी माह में नार्वे से ही एक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ जिसका नाम है 'शांतिदूत'। इसका क्षेत्र नार्वे तक सीमित न रह कर किसी हद तक अंतर्राष्ट्रीय है।

''शांतिदूत के प्रकाशन के पीछे यह भी उद्देश्य रहा कि विश्व के लगभग एक सौ तीस देशों में करीब एक करोड़ पचास लाख की संख्या में जो अप्रवासी भारतीय है। उन्हें एक सूत्र में बांधा जाए तथा अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया जाए। भारत के एक गरिमामय चित्र से उनका साक्षात्कार हो। भारत में जो अच्छा हो रहा है, उससे भी उनका परिचय हो। यह पत्रिका आज विश्व के एक सौ पचास से अधिक देशों तथा एक सौ तीस विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ी जा रही है।[9]

इस प्रकार हिन्दी विश्व के लगभग 175 देशों में बोली जाती है। विश्व के विविध राष्ट्रों में इसके पठन–पाठन की व्यवस्था है। जो इसकी सुदृढ़ स्थिति का परिचायक है। हिन्दी की सुदृढ़ स्थिति में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की भी भूमिका रही है। हिन्दी एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके लिए विश्व–सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों की वर्तमान श्रृंखला की वैचारिक शुरूआत सितम्बर 1973 में राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के नायक मधुकर राव चौधरी के नेतृत्व में हुई थी। तत्कालीन प्रधान मंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया और भारत सरकार ने मई 1974 में पूर्ण सहयोग एवं समर्थन का आशवासन दिया। इस प्रकार भारतीयों की सार्वभौमिक अखंडता–एकता के लिए तथा हिन्दी को विश्वव्यापी बनाने के उद्देश्य से 1975 में नागपुर विश्व हिन्दी सम्मेलन की जो शोभायात्रा प्रारम्भ हुई उसने जुलाई 2007 में न्यूयार्क में अपने आठवें पड़ाव को पूरा किया। जिनका प्रमुख उद्देश्य मुख्यतः अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी भाषा को उजागर करना है। हिन्दी भाषा और साहित्य में विदेशी विद्वानों के योगदान को मान्यता प्रदान करना, प्रवासी भारतीयों के बीच अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिन्दी का विकास करना, विज्ञान और प्रौद्योगियों के आर्थिक विकास और संचार के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना है।

हिन्दी सम्मेलनों की निरन्तरता हिन्दी की सुखद स्थिति को दर्शाती है। प्रथम पांच हिन्दी सम्मेलनों का बोधवाक्य – वसुधैव कुटुम्बकम रहा। हिन्दी सम्मेलनों का दूसरा पहलू यह भी है कि यह अन्य देशों के साथ भारत मे माधुर्यपूर्ण संबंधों को मजबूती प्रदान करना है। अभी तक जितने भी हिन्दी सम्मेलन आयोजित हुए, सभी के द्वारा हिन्दी भाषा वैश्विक मंच पर और अधिक सुदृढ़ स्थिति में आ गई।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी आज विश्व भाषा के रूप में अनेक देशों में तेजी से लोकप्रिय होती जा रही है और विश्व के विराट फलक पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। हिन्दी मात्र एक भाषा ही नहीं, भाव भी है। वह भारतीय संस्कृति की सबल, समर्थ, सशक्त संवाहिका है, जो विदेशा में बसे करोड़ों की संख्या में प्रवासी भारतीयों और भारतीय मूल के लोगों के बीच आत्मीयता के मधुर संबंध–सूत्र स्थापित करती है। उन्हें अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित करती है तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति का विस्तार से आंकलन कर विदेशों में भी भारतीय संस्कृति और अस्मिता को बढ़ावा दे रही है। हिन्दी निरन्तर अपना साम्राज्य बढ़ा रही है। आंकलन के अनुसार विश्व में हिन्दी बोलने वाले लोग 50 करोड़ हैं। हिन्दी समझने वाले लोग 80 करोड़ हैं। इस आधार पर अंग्रेजी और चीनी भाषा के बाद हिन्दी विश्व स्तर पर बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। अतः कहा जा सकता है कि विश्व क्षितिज के विराट ललाट पर हिन्दी की बिन्दी सम्पूर्ण आभा के साथ चमक रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अमित जोशी, नार्वे में हिन्दी के विविध आयाम, विश्वविद्यालय पर हिन्दी, प्रथम अंक, पृ. 129,
2. डॉ० वासुदेव शर्मा, हिन्दी साहित्य का विकास, सूर्य प्रकाशन,नई दिल्ली, पृ. 127,
3. कैलाश चन्द्र भाटिया तथा श्री मोतीलाल चतुर्वेदी की पुस्तक 'हिन्दी भाषा : विकास और स्वरूप, ग्रंथ अकादमी से साभार'',
4. बालेन्दु दाधीच, हिन्दी जगत, जनवरी–मार्च 2009, पृ. 34,
5. डॉ० वासुदेव शर्मा, हिन्दी साहित्य का विकास, सूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 11,
6. डॉ० वासुदेव शर्मा, हिन्दी साहित्य का विकास, सूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.8,
7. विदेशी हिन्दी साहित्यकार, हिन्दी है पहचान परिशिष्ट, दैनिक जागरण, 14 सितम्बर, 2014, पृ. 7,
8. सुरेन्द्र विक्रम का लेख, वर्तमान साहित्य, सितम्बर, 2008, पृ. 18,
9. शंकुतला बहादुर (अमेरिका), हिन्दी जगत, जनवरी–मार्च 2009, पृ. 23